शत्रु पर घातक प्रहार किये। दुर्भाग्यवश जयचन्द की आँख में तीर लगने से वह हाथी से गिर पड़ा और वीरगति को प्राप्त हुआ। उसकी मृत्यु से राजपूत सेना में भगदड़ मच गई और सहस्त्रों राजपूत तलवार के घाट उतार दिये गये। विजेता ने बनारस की ओर कूच किया और नगर को खूब लूटा तथा नष्ट-भ्रष्ट किया। उसके सूबेदार कुतुबुद्दीन ऐबक तथा अन्य सेनापतियों ने बंगाल, बिहार, रणथंभौर, कालिजर, ग्वालियर, बियान आदि को जीत लिया। १२०४ ई० में मुहम्मद का अन्तिम आक्रमण ख्वारिज्म पर हुआ जिसमें वह बुरी तरह पराजित हुआ। अन्त में १२०६ ई० में जब वह खोखरों के विद्रोह का दमन कर गजनी लौट रहा था, तो एक खोखर के द्वारा उसकी हत्या कर डाली गई। इस प्रकार उत्तरी भारत का बहुत सा भाग मुसलमानों के अधिकार में आ गया।

मुहम्मद का चरित्र

तत्कालीन इतिहासकारों के वर्णन से पता लगता है कि मुहम्मद एक उदार शासक था। वह विद्वानों का आदर करता था। उसमें महमूद जैसी धर्मान्धता न थी। फरिश्ता ने लिखा है—'उसकी न्यायपरायण शासकों जैसी प्रकृति थी, (वह) ईश्वर से डरने वाला, तथा हृदय में सदा प्रजा की भलाई का ध्यान रखने वाला था।' वह एक उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ एवं अनुभवी तथा कुशल सेनापति था। भारत में उसकी विजय अधिक महत्वपूर्ण साबित हुई। वस्तुतः उसकी विजयों के कारण ही भारत में मुसलमानों का राज्य स्थापित हो सका।

मुहम्मद गोरी तथा महमूद गजनवी की तुलना

(१) मुहम्मद गोरी महमूद की अपेक्षा कहीं अधिक कुशल राजनीतिज्ञ था। मुहम्मद गोरी के आक्रमण का उद्देश्य भारत में स्थायी राज्य स्थापित करना था, जब कि महमूद धन-लोलुपता के कारण भारत आया था। डा० ईश्वरी प्रसाद लिखते हैं, "महमूद ने भारत में बवन्डर की भाँति प्रवेश किया था और लूट-मार से अपार सम्पत्ति प्राप्त कर वह स्वदेश लौट गया था। उसके आक्रमणों का उद्देश्य राज्य-स्थापना न होकर लूटमार और मूर्तियों का विध्वंस-मात्र था। परन्तु मुहम्मद गोरी यथार्थ में विजेता था। उसने देश को विजित कर स्थायी राज्य स्थापित करने का उद्योग किया।"

(२) यद्यपि दोनों ही वीर एवं साहसी योद्धा थे, परन्तु मुहम्मद अधिक युद्ध कुशल था। उसे महमूद की अपेक्षा अपने पूर्वजों से छोटा राज्य प्राप्त था जिसको उसने एक महान् राज्य का रूप दे डाला।

(३) दोनों ही महत्वाकांक्षी एवं अदम्य उत्साही थे। महमूद ने भारत पर सत्रह बार आक्रमण किये और कभी पराजित नहीं हुआ, परन्तु मुहम्मद ने उसकी अपेक्षा कम आक्रमण भारत पर किये और पराजित भी हुआ था।

(४) मुहम्मद गोरी यद्यपि सुन्दर एवं पढ़ा-लिखा था परन्तु उसने विद्वानों को आश्रय नहीं दिया। इसके विपरीत महमूद कुरूप एवं अशिक्षित होते हुये भी कला एवं साहित्य का आश्रयदाता था और उसकी राजसभा सदा विद्वानों एवं कवियों से दीप्त रही।

(५) मुहम्मद ने सदैव अपने भाई गयासुद्दीन का आदर किया और प्रेम व्यवहार बनाये रक्खा, जबकि महमूद ने राज्य के लिये अपने भाई से संघर्ष किया था।

(६) गोरी की भारतीय विजय महमूद की विजयों से अधिक